नित्यहोमविधि

प्रातःकाल स्नान संध्या आदिके अनन्तर नित्यहोम करना चाहिये। नित्यहोम प्रातः और सायंकालमें किया जाता है। साग्निक पुरुष स्थापित अग्निमें नित्यहोम करते हैं, निरग्निक पुरुष '**पृष्टो दिवि**'-विधानके अनुसार नित्य हवनकालमें अग्नि स्थापित कर लेते हैं। आजकल अधिकांश लोग निरग्निक ही है, अत: उनकी सुविधाके लिये अग्निस्थापनपूर्वक हवनका प्रकार दिया जा रहा है।

प्रातःकाल सूर्योदयसे पूर्व हवनका मुख्य काल है, उसके बाद मौण काल है। सायंकालमें जबतक पश्चिममें लाली दिखायी दे और तारें अच्छी तरह उदित न हुए हों तभी तक हवनका मुख्य काल है, उसके पश्चात् गौण काल है।

पूर्वाभिमुख आसनपर बैठकर आचमन और प्राणायाम करके हाथमें कुशकी पवित्री और जल ले निम्नांकित वाक्य पढ़कर संकल्प करे-

ॐतत्सदद्युतस्य श्रीब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तक देशान्तर्गते पुण्यक्षेत्रे कलियुगे कलिप्रथमचरणे अमुकसंवत्सरे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रः अमुकशर्मा अहं

नित्यहोमविधि

श्रीपरमेश्वरप्रीतये प्रातः/ सार्थ होमं करिष्ये।

इसके बाद वेदी अथवा ताम्रकुण्डमें पंचभूसंस्कार करना चाहिये। तीन कुशोंसे भूमि अथवा ताम्रकुण्डको झाड़ दे, उन कुशोंको ईशानकोणमें फेंक दे, गोमय और जलसे लेपन करे। तत्पश्चात् सुवा अथवा तीन कुशोद्वारा उत्तरोत्तर क्रमसे तीन-तीन पूर्वाग्र रेखाएँ करे। उल्लेखन-क्रमसे अनामिका और अंगुष्ठद्वारा तीन बार मृत्तिका उटाकर ईशानमें फेंक दे, फिर यहाँ जल छिड़के। इस प्रकार संस्कार करके निम्नांकित मन्त्रसे वहाँ अग्नि ते आवे। पहले मन्त्रोंके विनियोग पढ़े।।

अग्न्याहरणमन्त्र

अन्वग्निरित्यस्य पुरोधा ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दोऽग्निदेवता अग्न्यानयने विनियोगः।

ॐ अन्वग्निरुषसामग्रमख्यदन्वहानि प्रथमो जातवेदाः । अनु सूर्यस्य पुरुत्रा च रश्मीननु द्यावापृथिवी आततन्थ ॥ (यजु०११।१७)

जिन अग्निदेवने उपाकालके प्रारम्भमें क्रमशः प्रकाश फैलाया, फिर समस्त उत्पन्न वस्तुओंका जान रखनेवाले जिन प्रमुख देवने दिनोंको अभिव्यक्त किया तथा सूर्यकी किरणोंको अनेकों रंगरूपोंमें प्रकाशित किया और जो आकाश एवं पृथ्वीको सब

ओरसे व्याप्त किये हुए हैं, उन अग्निदेवका हम साक्षात्कार कर रहे हैं।

इसके बाद निम्नांकित मन्त्र पढ़कर पूर्वोक्त वेदी अथवा ताम्रकण्डमें अग्निकी स्थापना करे।

अग्निस्थापनमन्त्र

पृष्टो दिवीत्यस्य कुत्सऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वैश्वानरो देवता अग्निस्थापने विनियोगः ।

ॐ पृष्टो दिवि पृष्टो अग्निः पृथिव्यां पृष्टो विश्वा ओषधीराविवेश। वैश्वानरः सहसा पृष्टो अग्निः स नो दिवा स रिषस्पातु नक्तम् ॥ (यजु०१८/७३)

द्युलोकमें कौन आदित्यरूपसे तप रहा है ? इस प्रकार जिनके विषयमें मुमुक्षुओंने प्रश्न किया है, पृथ्वी अर्थात् अन्तरिक्षलोकमें कौन विद्युत्' रूपसे प्रकाशमान हो रहा है? इस प्रकार | जिनके सम्बन्धमें जलार्थी लोगोंद्वारा प्रश्न किया गया है। जो सम्पूर्ण ओषधियों (ब्रीहि यव आदि अन्नों) में व्याप्त होकर मनुष्योंकी जिज्ञासाके विषय हो रहे हैं। अर्थात ताप, फलपरिपाक और प्रकाशके द्वारा कौन समस्त प्राणियोंका उपकार और उनके जीवनकी रक्षा कर रहा है? इस प्रकार जिन्हें जाननेके लिये लोग प्रश्न करते हैं) तथा यज्ञमें अध्वर्युद्वारा बलपूर्वक मन्थन करने पर

नित्यहोमविधि

यह किसके लिये मन्थन किया जा रहा है ? ऐसा लोगोंने जिनके विषयमें प्रश्न किया है, वे वैश्वानर अग्निदेव दिनमें और रात्रिमें भी हमें नाशसे बचावें।

तदनन्तर निम्नांकित मन्त्रोंसे अग्निका उपस्थान (प्रार्थना एवं प्रणाम) करे।

उपस्थानमन्त्र

समिधाग्निमिति तं त्वेति च देवा ऋषयो गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता अग्न्युषस्थाने विनियोगः।

ॐ समिधाग्निं दुवस्यत घुर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन् हव्या जुहोतन॥ (यजु०३।१०

हे ऋत्विग्गण! आपलोग घृताक्त समिधासे अग्निदेवकी परिचर्या करें तथा आतिथ्यकर्मसे पूजनेयोग्य उन अग्निदेवको घीसे प्रचलित करें। फिर इस प्रज्वलित अग्निमें सब और नाना प्रकारके हविष्यका हवन करें।

ॐ तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि । बृहच्छोचा यविष्ठ्य ॥२ (यजु० ३।३)

हे अङ्गिरः-हे गतिशील अग्निदेव! प्रसिद्ध गुणों से युक्त आपको हम समिक्षा और घीसे प्रज्वलित कर रहे हैं। हे निर्जर देव! आप

नित्यहोमविधि

अत्यन्त देदीप्यमान होइये।

इसके पश्चात् नीचे लिखे व्याहृतियोंसहित तीन मन्त्रोंसे अग्निको प्रज्वलित करें।

अग्नि-प्रज्चालनमन्त्र

त्रिव्याहृतीनां प्रजापति- षिर्गायत्र्युष्णि- गनुष्टुभश्छन्दांस्यग्नि-वायु- सूर्या देवताः, ता सवितुरिति कण्व ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सविता देवता, तत्सवितुरिति विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता, विश्वानि देवेति नारायण ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता सन्धुक्षणे विनियोगः ।

ॐ भूर्भुवः स्वः ताः सवितुर्वरेण्यस्य चित्रामाहं वृणे सुमतिं विश्वजन्याम् । यामस्य कण्वो अदुहत् प्रपीनाः सहस्रधारां पयसा महीं गाम्। (यजु०१७/७४)

मैं वरण करनेयोग्य सविताकी विचित्र (नाना प्रकारके मनोवांछित फल देनमें समर्थ) तथा सब लोगोंका हित-साधन करनेवाली उस कल्याणमयी बुद्धिको अंगीकार करता है, जिस गौरूपा बुद्धिका कण्व ऋषिने दोहन किया था तथा जो अत्यन्त पुष्ट सहस्रों क्षीर-धाराओंसे युक्त और दूधसे परिपूर्ण है।

नित्यहोमविधि

ॐ तत्सवितुवरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात्॥२ (यजु:३०।२)

हम स्थावर-जंगमरूप सम्पूर्ण विश्वको उत्पन्न करनेवाले उन निरतिशय प्रकाशमय परमेश्वरके भजनेयोग्य तेजका ध्यान करते हैं, जो हमारी बुद्धियोंको सत्कमौकी ओर प्रेरित करते हैं।

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आसुव॥ (यजु०३०/३)

हे सूर्यदेव ! सम्पूर्ण पाप दूर कर दो और जो कल्याणस्वरूप वस्तु है, वह हमें प्राप्त कराओ।

इस प्रकार इन मन्त्रोंसे अग्निको प्रज्वलित करके बायें हाथमें तीन कुश रखे और खड़ा होकर प्रादेशमात्र लम्बी तीन घृताक्त समिधाएँ अग्निमें छोड़े। अग्निसमिन्धनका मन्त्र इस प्रकार है-

समिन्धन-मन्त्र

पुनस्त्वेति प्रजापतिऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवता अग्निसमिन्धने विनियोगः ।

ॐ पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः समिन्धताम्पुनर्ब्रह्माणोवसुनीथ यज्ञैः । घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः॥

नित्यहोमविधि

(यजु० १२॥ ४४)

हे अग्निदेव! आदित्य, रुद्र और वसुगण तुम्हें पुनः उद्दीप्त करें। है वसुनीथ (धननायक)! ऋत्विक और यजमानरूप ब्राह्मणलोग यज्ञोंके द्वारा तुम्हें फिरसे प्रज्वलित करें तथा तुम भी हमारे अर्पण किये हुए घोसे अपने शरीरको बढ़ाओ (प्रज्वलित करो) और तुम्हारे प्रचलित होनेपर यजमानकी कामनाएं पूर्ण हों।

फिर बैठकर जलले अग्निका पर्युक्षण करे और घृत, दधि, खीर अथवा घृताक्त यत्व, चावल या तिल आदिसे अथवा मधुर फलसे निम्नलिखित मन्त्रोंद्वारा चार आहुतियाँ दे। इनमें आरम्भकी दो आहुतियाँ सायंकालमें दी जाती हैं और अन्तकी दो आहुतियाँ प्रातः कालमें। सायंकालसे आरम्भ करे। सायं प्रातः मिलकर एक दिनका होम है। सायंकालमें जिस द्रव्यसे होम कर उसीसे प्रातःकाल भी करे।।

सायंहोम

ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम।

ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम ।।

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

नित्यहोमविधि

प्रातर्होम

ॐ सूर्याय स्वाहा, इदं सूर्याय न मम।

ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम ।।

इसके पश्चात् अग्निकी प्रदक्षिणा करके प्रणाम करे और-

त्र्यायुषमिति नारायण ऋषिरुष्णिक् छन्द आशीर्देवता भस्मधारणे विनियोगः ।

इस वाक्यसे विनियोग करके-

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नः कश्यपस्य त्र्यायुषम् । यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्॥ (यजु० ३।६२)

जमदग्नि ऋषि और कश्यप मुनिका जो तीनों (बाल्य, यौवन, जरा) अवस्थाओंकी आयुका समूह है तथा इन्द्र आदि देवताओंकी जो तीनों (बाल्य, कुमार और यौवन) अवस्थाओंकी आयुका समाहार है, वह हमें प्राप्त हो।'

इस मन्त्रसे होमके भस्मको क्रमशः ललाट, गोवा, दक्षिण बाहुमूल और हृदयमें लगावे। इसके बाद निम्नांकित श्लोक पढ़कर न्यूनतापूर्तिके लिये भगवान् से प्रार्थना करे।

नित्यहोमविधि

ॐ प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् ।

स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्ण स्यादिति श्रुतिः ।।

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु ।

न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥

ॐविष्णवे नमः । ॐविष्णवे नमः ।। ॐविष्णवे नमः ।।

यज्ञमें कर्म करनेवालोका जो कर्म प्रमादवश विधिसे च्युत हो जाय, वह भगवान् विष्णुके स्मरणमात्रसे ही पूर्ण हो सकता है- ऐसा श्रुतिका वचन है।

जिनके स्मरण और नामोच्चारणसे तप, यज्ञ आदि क्रियाओंमें न्यूनत्ताको तत्काल पूर्ति हो जाती है, उन भगवान् अच्युतको मैं प्रणाम करता हूँ।

अन्तमें निम्नांकित वाक्य कहकर यह हवनकर्म भगवान् को अर्पण करे।

कृतेनानेन नित्यहोमकर्मणा श्रीपरमेश्वरः प्रीयताम्, न मम ।

॥ इति॥

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661